Do Gudriyon Wala (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 229
Weekly Booklet : 229

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" की एक क़िस्त बनाम

दो गुदड़ियों वाला

सफ़हात 26

बरोज़े हश्र ईंट और धागे का मुतालबा 02

नाबीना को चालीस क़दम चलाने की फ़ज़ीलत 04

हम्ला आवर के साथ हुस्ने सुलूक 09

पुर असरार हबशी 12

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **दो गुदड़ियों वाला**
सिने त़बाअ़त : जुमादल ऊला **1443** हि., दिसेम्बर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

दो गुदड़ियों वाला

येह रिसाला (**दो गुदड़ियों वाला**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" सफ़ह़ा 326 ता 347 से लिया गया है।

दो गुदड़ियों वाला

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 24 सफ़ह़ात का रिसाला **"दो गुदड़ियों वाला"** पढ़ या सुन ले, उसे हमेशा नेकियां करने, नेकियां करवाने, गुनाहों से बचने और दूसरों को बचाने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा कर बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع للسیوطی، 7/199، حدیث:22352)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾23﴿ एक बार की हुई ग़ीबत के सबब बेहोश हो गए

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ एक मक़ाम से गुज़रे तो बेहोश हो गए। होश आया तो लोगों ने बेहोशी का सबब पूछा : फ़रमाया : यहां पहुंचते ही एक दम याद आया कि इस मक़ाम पर मैं ने एक शख़्स की ग़ीबत की थी लिहाज़ा मुझे **अल्लाह** पाक की पकड़ और आख़िरत के ह़िसाब का ख़याल आ गया इस ख़ौफ़ से मैं बेहोश हो गया। (نزہۃ المجالس، 1/199)

बरोज़े ह़श्र ईंट और धागे का मुत़ालबा

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! हमारे बुज़ुर्गों का ख़ौफ़े ख़ुदा भी मरह़बा ! किसी गुनाह से लाख तौबा करें मगर ख़ौफ़ ख़त्म नहीं होता, नदामत नहीं जाती, एक हम हैं कि गुनाह करने के बा'द हंसते हंसते अपने गालों पर बारी बारी हाथ लगा कर दिल को मना लेते हैं कि हम गुनाहों से साफ़ सुथरे हो चुके और फिर उस गुनाह को अपने पर्दए ख़याल से ह़र्फ़े ग़लत़ की त़रह़ मिटा देते और अपनी मस्तियों में बद मस्त हो जाते हैं ! आह ! क़ियामत का ह़िसाब ! ख़ुदा की क़सम ! बिल ख़ुसूस हुक़ूक़ुल इ़बाद का मुआ़मला इन्तिहाई तश्वीश नाक है जैसा कि **ह़ज़रते** ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क़ियामत में अपना ह़क़ वुसूल करने के लिये एक शख़्स दूसरे का हाथ पकड़ लेगा वोह दूसरा शख़्स कहेगा : मैं तुझे नहीं पहचानता, तू कौन है ? पहला शख़्स कहेगा : तूने मेरी दीवार से एक ईंट निकाली थी और तूने मेरे कपड़े से धागा निकाला था। (इस सबब से मैं तुझ पर अपने ह़क़ की वुसूली के लिये दा'वा करता हूं) (احیاء العلوم، 5/99)

चालीस बरस से रो रहा हूं

इसी लिये हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم लोगों के ब ज़ाहिर इन्तिहाई मा'मूली नज़र आने वाले हुक़ूक़ से भी बहुत डरते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना **कह्मस** رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं एक गुनाह की नदामत के सबब चालीस बरस से रो रहा हूं। किसी ने पूछा : या सय्यिदी ! वोह कौन सा गुनाह है ? फ़रमाया : एक मरतबा मेहमान के लिये मछली ली थी फिर उस के खाने के बा'द हाथ धोने के लिये मैं ने अपने पड़ोसी की दीवार से बिला इजाज़त मिट्टी का टुकड़ा ले लिया था। (رسالہ قشیریہ، ص149)

बड़ी कोशिशें की गुनह छोड़ने की रहे आह ! नाकाम हम या इलाही
ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है येह तेरा ही तो है करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾24﴿ ग़ीबत करने वाले का वक़ार जाता रहता है

एक दाना (अ़क़्ल मन्द) के सामने किसी शनासा ने एक मुसल्मान की ग़ीबत की, उस दाना ने कहा : ऐ शख़्स ! पहले मेरा दिल फ़ारिग़ था, अब तूने ग़ीबत के ज़रीए मेरा दिल उस मुसल्मान के ऐ़बों के मुतअ़ल्लिक़ वस्वसों और नफ़रतों में मश्ग़ूल कर दिया और उस मुसल्मान को मेरी नज़र में ह़क़ीर बनाने की सई की और इस त़रह़ से तू भी मेरे नज़्दीक "गन्दा" हुवा, क्यूं कि मैं समझता था कि तू अमीन (या'नी अमानत दार) है और बात को ख़ूब छुपाता है, अब जब कि तूने उस का ऐ़ब खोला तो मा'लूम हो गया कि तू अमीन नहीं है तेरे दिल में कोई बात रुकती नहीं। (تنبیہ الغافلین، ص92 ماخوذا)

﴾25﴿ माज़ी की याद..... दो नाबीना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ग़ीबत करने वाला ख़ुद ही गन्दा बनता और ज़लील होता है। लोग ग़ीबत के आ़दियों से कतराते, घिन खाते और ख़ुद को बचाते हैं। अपने लड़कपन की धुंदली यादों में से दो नाबीनाओं का तज़्किरा करता हूं। एक नाबीना मुकम्मल दाढ़ी वाला, क़ुरआने पाक का बहुत पक्का ह़ाफ़िज़ और मज़्हबी वज़्अ़ क़त़्अ़ का शख़्स था मगर बातें और ग़ीबतें बहुत ज़ियादा किया करता था, किसी को नहीं छोड़ता था, मैं (या'नी सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) उस से कतराता था। दूसरा नाबीना दाढ़ी मुन्डा या ख़श्ख़शी दाढ़ी वाला आ़म सा आदमी था, उस की ख़ूबी येह थी कि एक दम ख़ामोश त़बीअ़त था उस का नाम तक मुझे

मा'लूम नहीं, कभी भी उस के मुंह से मैं ने किसी की ग़ीबत नहीं सुनी, मुझे नमाज़ के बा'द बारहा लाठी पकड़ कर उसे उस के घर तक ले जाने का मौक़अ़ मिला है। लगे हाथों नाबीना को चलाने की फ़ज़ीलत भी मुलाहज़ा कीजिये।

नाबीना को चालीस क़दम चलाने की फ़ज़ीलत

आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **''बिहिश्त की कुन्जियां''** (244 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 226 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि **जो किसी नाबीना को चालीस क़दम हाथ पकड़ कर चलाएगा उस के चेहरे को जहन्नम की आग नहीं छूएगी।** (تاریخ مدینۃ،3/48)

नाबीना को चलाने का त़रीक़ा

एक और रिवायत भी मुलाहज़ा हो चुनान्चे ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि मदीने के सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस ने किसी नाबीना को एक मील तक चलाया तो उसे मील के हर ज़िराअ़ (या'नी गज़) के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा। जब तुम नाबीना को चलाओ तो उस का उलटा हाथ अपने सीधे हाथ से थाम लो कि येह भी सदक़ा है। (فردوس الاخبار،5/350،حدیث:8397)

ग़ुलाम को आज़ाद करने की फ़ज़ीलत

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ख़ुदाए रह़मान की रह़मतों पर क़ुरबान कि उस ने हमारे लिये सवाब कमाना किस क़दर आसान रखा है। ग़ुलाम आज़ाद करने पर क्या सवाब मिलता है इस बारे में ब कसरत रिवायात हैं, **अल्लाह** पाक चाहे तो अपने फ़ज़्लो करम से नाबीना का हाथ पकड़ कर चलाने पर वोह सब सवाब अ़त़ा फ़रमा दे। तरग़ीब के लिये एक ह़दीसे मुबारक बयान की जाती है चुनान्चे हम गुनाह गारों को अपने रब

से जन्नत दिलवाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : जो शख़्स मुसल्मान ग़ुलाम को आज़ाद करेगा इस (ग़ुलाम) के हर उ़ज़्व के बदले में **अल्लाह** पाक उस (आज़ाद करने वाले) के हर उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाएगा। ह़ज़रते सईद बिन मरजाना رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने जब ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ख़िदमते आ़ली में येह ह़दीसे पाक सुनाई तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपना एक ऐसा ग़ुलाम आज़ाद कर दिया जिस की ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا दस हज़ार दिरहम क़ीमत लगा चुके थे ! (بخاری، 2/150، حدیث:2517)

कुछ ऐसा कर दे मेरे किर्दिगार आंखों में हमेशा नक़्श रहे रूए यार आंखों में
न कैसे येह गुलो गुन्चे हों ख़्वार आंखों में बसे हुए हैं मदीने के ख़ार आंखों में

(सामाने बख़्शिश, स. 145)

26 दा'वते इस्लामी के चैनल की बरकत से ग़ीबत से परहेज़

एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि हमारे घर वालों ने आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सो फ़ी सदी सुन्नतों भरे इस्लामी **चैनल** पर "ग़ीबत की तबाह कारियों" के मौज़ूअ़ पर एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान सुना। जिस में उन्हों ने मुआ़शरे में बोले जाने वाले **ग़ीबत** के अल्फ़ाज़ की त़रफ़ भी तवज्जोह दिलाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उस बयान को सुन कर **ग़ीबत** से बचने का बहुत ज़ेह्न बना। एक मर्तबा मैं ने घर के अन्दर कहा कि "छोटा भाई फ़ुलां चीज़ ले कर अभी तक वापस नहीं आया, **बहुत सुस्त** है।" तो मेरी वालिदए मोह़तरमा ने फ़ौरन मेरी गिरिफ़्त फ़रमाई कि येह तो तुम ने उस की **ग़ीबत** कर डाली क्यूं कि तुम ने उस को "**बहुत सुस्त**" कह कर उस की बुराई की ! चुनान्चे मैं ने फ़ौरन **तौबा** की। अब घर के अफ़राद की येह ह़ालत

है कि बात बात पर एक दूसरे की तवज्जोह दिलाते हैं कि अभी जो बात हुई या फ़ुलां लफ़्ज़ बोला कहीं येह **ग़ीबत** तो नहीं !

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾27﴿ ''वोह मुर्दे की त़रह़ सोया है'' कहना

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं बहुत छोटी ही उ़म्र से रातों को जाग कर इ़बादत किया करता था । एक बार वालिदे मोह़तरम के साथ सारी रात इ़बादत में गुज़ारी और तिलावते क़ुरआन करता रहा । चन्द अफ़राद हमारे क़रीब मज़े से सो रहे थे । मैं ने वालिदे मोह़तरम से कहा : इन में से कोई एक भी ऐसा नहीं जो उठ कर (तहज्जुद के) दो नफ़्ल ही पढ़ ले, येह तो **मुर्दों** की त़रह़ सोए पड़े हैं ! वालिदे गिरामी ने फ़रमाया : बेटा ! तुम इ़बादत करने के बजाए सारी रात सोए रहते येही बेहतर था क्यूं कि तुम बेदार रह कर **ग़ीबत** की आफ़त में गिरिफ़्तार हो गए । (تفسیر روح البیان، 9/89)

''ग़ीबत करना गुनाह है'' के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से नफ़्ली कामों के मुतअ़ल्लिक़ ग़ीबत की 14 मिसालें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि तहज्जुद वग़ैरा नफ़्ली इ़बादात से ग़ाफ़िल हो कर सारी रात सोया रहना उस के ह़क़ में बेहतर है जो कि रात भर इ़बादत तो करे मगर **ग़ीबत** की आफ़त में भी

जा पड़े। तहज्जुद व नवाफ़िल अदा करना बेशक कारे सवाब है मगर **ग़ीबत** करने वाला ह़क़दारे अ़ज़ाब है। इस **ह़िकायत** में उन लोगों के लिये इ़ब्रत के कसीर मदनी फूल हैं जो बिला ह़ाजते शर्ई इस त़रह़ से **ग़ीबतें** करते हैं मसलन ❁ फ़ुलां इशराक़ चाश्त नहीं पढ़ता ❁ उस को बहुत जगाया मगर फ़ज्र (या) तहज्जुद के लिये नहीं उठा, बस ❁ मुर्दे की त़रह़ सोया पड़ा रहा ❁ बा जमाअ़त नमाज़ की पाबन्दी नहीं करता ❁ पीर शरीफ़ का रोज़ा नहीं रखता ❁ जब भी इज्तिमाअ़ की दा'वत देता हूं "आंटी मार देता है" ❁ नेक आ'माल पर अ़मल करने में सुस्त है ❁ इज्तिमाअ़ में देर से आता या ❁ बाहर बस्तों पर घूमता या ❁ होटल में बैठा या ❁ दोस्तों के साथ बातें करता रहता है ❁ मदनी मश्वरे में हमेशा ताख़ीर से आता है ❁ कभी मदनी क़ाफ़िले में सफ़र नहीं करता और ❁ समझाओ तो झूटे बहाने कर देता है।

﴾28﴿ बुराई करने वाले के साथ भलाई की अनोखी ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्त़ानुल मशाइख़ ख़्वाजा मह़बूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया की एक आदमी ख़ूब **ग़ीबतें** करता और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर त़रह़ त़रह़ की तोह्मतें बांधता फिरता था। इस के बा वुजूद आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उस के घर ख़र्च के लिये रोज़ाना कुछ न कुछ भिजवा दिया करते थे, त़वील मुद्दत तक येह सिल्सिला चलता रहा। एक दिन उस की ज़ौजा ने ग़ैरत दिलाते हुए कहा : दस्तूर तो येह है कि जिस का खाना उस का गाना, मगर येह कहां का इन्साफ़ है कि जिस का खाना उसी पर ग़ुर्राना ! आप भी अ़जीब शख़्स हैं कि एक ऐसे बुज़ुर्ग के पीछे लगे हुए हैं जो बिग़ैर सुवाल आप के बच्चों को पाल रहा है ! बीवी की बातें सुन कर

उस को नदामत हुई, ग़ीबतों और तोह्मतों से बाज़ आ गया। उसी रोज़ से ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने भी अख़ाजात भिजवाने बन्द कर दिये। वोह ह़ाज़िरे दरबार हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : सरकार ! इस में क्या ह़िक्मत है कि जब तक आप के बारे में ख़ुराफ़ात बकता रहा मुझ पर इन्आ़मात व इक्रामात की बरसात रही मगर जूं ही मुज़ख़्ख़फ़ात (या'नी वाहियात बक्वासात) से बाज़ आया इ़नायात व नवाज़िशात बन्द हो गईं ! इर्शाद फ़रमाया : जब तक तुम मेरी आबरू रेज़ी करते रहे मुझे तुम्हारी त़रफ़ से नेकियां मिलती रहीं और ख़त़ाएं मिटती रहीं, उन दिनों तुम गोया मेरे अजीर या'नी मज़दूर थे लिहाज़ा मैं तुम्हें नेकियां भेजने और गुनाह मैटने की उजरत (मज़दूरी) पेश करता रहा, अब जब कि तुम ने येह काम तर्क कर दिया है तो फिर मैं उजरत किस बात की दूं ! (سبع سنابل، ص59 ملخصا)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

गुनाहगार हूं मैं लाइक़े जहन्नम हूं करम से बख़्श दे मुझ को न दे सज़ा या रब
बुराइयों पे पशेमां हूं रह़म फ़रमा दे है तेरे क़ह़र पे ह़ावी तेरी अ़त़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

ईंट का जवाब नायाब गोहर से

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्त़ानुल मशाइख़ ख़्वाजा मह़बूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मज़्कूरा ह़िकायत में येह **मदनी फूल** भी इन्तिहाई ख़ुश्बूदार है कि **अह्लुल्लाह** ईंट का जवाब पथ्थर से नहीं "नायाब गोहर" से दिया करते हैं ! **अल्लाह** वाले बुराई को बुराई से नहीं भलाई से टाला करते हैं और वोह ऐसा क्यूं न करें कि पारह 24 सूरए حٰمٓ السَّجْدَة की 34वीं आयते करीमा में इर्शाद है :

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾

(پ24، حٰمٓ السجدۃ:34)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ सुनने वाले ! बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।

हुस्ने सुलूक का नतीजा

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान शरीफ़" में बुराई को भलाई से टालने का त़रीक़ा बताते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : मसलन ग़ुस्से को सब्र से, जह्ल को ह़िल्म से, बद सुलूकी को अ़फ़्व (व दर गुज़र) से कि अगर कोई तेरे साथ बुराई करे तू मुआ़फ़ कर। इस ख़स्लत का नतीजा येह होगा कि दुश्मन दोस्तों की त़रह़ मह़ब्बत करने लगेंगे।

शाने नुज़ूल : कहा गया है कि येह आयत अबू सुफ़्यान के ह़क़ में नाज़िल हुई कि बा वुजूद उन की शिद्दते अ़दावत के **नबिय्ये करीम** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के साथ सुलूके नेक किया, उन की साह़िब ज़ादी को अपनी ज़ौजिय्यत का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया, इस का नतीजा येह हुवा कि वोह सादिक़ुल मह़ब्बत जां निसार हो गए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 884)

﴾29﴿ ह़म्ला आवर के साथ ह़ैरत अंगेज़ हुस्ने सुलूक

बुराई को भलाई से टालने के ज़िम्न में एक अ़जीबो ग़रीब **ह़िकायत** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नसीरुद्दीन मह़मूद बिन यूसुफ़ रशीद अवधी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के आस्तानए आ़लिया (देहली) में दाख़िल हो कर छुरी से 15 या 17 वार कर के आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को शदीद ज़ख़्मी कर दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कमाले सब्र का मुज़ाहरा करते हुए ह़म्ला आवर से फ़रमाया : फ़ौरन अन्दर वाले कमरे

में छुप जाओ वरना लोग पहुंच गए तो शायद तुम्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे, वोह छुप गया। लोगों ने बहुत तलाशा मगर ह़म्ला आवर का सुराग़ न मिला, आधी रात के वक़्त मौक़अ़ पा कर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ह़म्ला आवर को वहां से रुख़्सत कर दिया। (سبع سنابل، ص64 ملخصا)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

سُبْحٰنَ الله **औलियाउल्लाह** की भी कैसी बुलन्द शानें होती हैं! वोह अपनी बुराइयां करने वालों बल्कि जान के दर पै रहने वालों के साथ भी ह़ुस्ने सुलूक किया करते हैं, किसी ने सच ही तो कहा है

بدی را بدی سہل باشد جزا   اگر مردی اَحسِن اِلٰی مَن اَسا

(या'नी बदी का बदला बदी से देना तो आसान है अगर तू मर्द है तो बुराई करने वाले के साथ भी भलाई कर)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾30﴿ दो गुदड़ियों वाला

आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "**उ़यूनुल ह़िकायात**" (413 सफ़ह़ात) ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा 18 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी कबीर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सर्दियों के दिन थे मैं मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा हुवा था कि क़रीब से एक शख़्स गुज़रा जिस ने **दो गुदड़ियां** ओढ़ रखी थीं। मेरे दिल में बात आई कि शायद येह भिकारी है, क्या ही अच्छा होता कि येह अपने हाथ से कमा कर खाता। जब मैं सोया तो ख़्वाब में दो फ़िरिश्ते आए मुझे बाज़ू से पकड़ा और उसी मस्जिद में ले गए। वहां एक शख़्स दो **गुदड़ियां**

ओढ़े सो रहा है जब उस के चेहरे से गुदड़ी हटाई गई तो येह देख कर मैं हैरान रह गया कि येह तो वोही शख़्स है जो मेरे क़रीब से गुज़रा था ! फ़िरिश्तों ने मुझ से कहा : "इस का गोश्त खाओ।" मैं ने कहा : मैं ने इस की कोई **ग़ीबत** तो नहीं की। कहा : "क्यूं नहीं ! तूने दिल में इस की **ग़ीबत** की, इस को हक़ीर जाना और इस से नाख़ुश हुवा।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी कबीर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : फिर मेरी आंख खुल गई, ख़ौफ़ की वज्ह से मुझ पर लरज़ा तारी था, मैं मुसल्सल तीस (30) दिन उसी मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा रहा, सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ के लिये वहां से उठता। मैं दुआ करता रहा कि दोबारा वोह शख़्स मुझे नज़र आ जाए ताकि उस से मुआफ़ी मांगूं। एक माह बा'द वोह पुर असरार **शख़्स** मुझे नज़र आ गया, पहले की तरह उस के जिस्म पर दो **गुदड़ियां** थीं। मैं फ़ौरन उस की तरफ़ लपका, मुझे देख कर वोह तेज़ तेज़ चलने लगा, मैं भी पीछे हो लिया। आख़िरे कार मैं ने उस को पुकार कर कहा : "ऐ **अल्लाह** पाक के बन्दे ! मैं आप से कुछ बात करना चाहता हूं।" उस ने कहा : ऐ इब्राहीम ! क्या तुम भी उन लोगों में से हो जो दिल के अन्दर मुअमिनीन की **ग़ीबत** करते हैं ? उस के मुंह से अपने बारे में ग़ैब की ख़बर सुन कर मैं बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब होश आया तो वोह शख़्स मेरे सिरहाने खड़ा था। उस ने कहा : क्या दोबारा ऐसा करोगे ? मैं ने कहा : "नहीं, अब कभी भी ऐसा नहीं करूंगा।" फिर वोह **पुर असरार शख़्स** मेरी नज़रों से ओझल हो गया और दोबारा कभी नज़र न आया। (عیون الحکایات، ص212) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बद गुमानी भी ग़ीबत है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस ह़िकायत से हमें इ़ब्रत के बे शुमार **मदनी फूल** चुनने को मिलते हैं, इस से येह भी मा'लूम हुवा कि किसी के बारे में **बद गुमानी** भी **ग़ीबत** है। या'नी किसी वाज़ेह़ क़रीने के बिग़ैर किसी के बारे में बुराई को दिल में जमा लेना कि वोह ऐसा ही है **बद गुमानी** कहलाता है जो कि **ग़ीबतुल क़ल्ब** या'नी दिल की **ग़ीबत** है। किसी के सादा लिबास वग़ैरा को देख कर उसे ह़क़ीर और भीक मांगने वाला फ़क़ीर जानना बड़ी भूल है। क्या मा'लूम हम जिसे ह़क़ीर तसव्वुर कर रहे हैं वोह कोई **गुदड़ी का ला'ल** या'नी पहुंची हुई हस्ती हो। जैसा कि मज़्कूरा **ह़िकायत** से ज़ाहिर हुवा कि वोह गुदड़ी पोश शख़्स कोई आ़म आदमी नहीं ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग थे !

न पूछ इन ख़िर्क़ा पोशों को अ़क़ीदत हो तो देख इन को
यदे बैज़ा लिये फिरते हैं अपनी आस्तीनों में

﴾31﴿ पुर असरार ह़बशी

मज़्कूरा ह़िकायत से मिलती जुलती एक और **ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बे इन्तिहा मुन्कसिरुल मिज़ाज थे। हर शख़्स को अपने से बेहतर तसव्वुर किया करते। एक दिन **दरियाए दिजला** के कनारे किसी **ह़बशी को शराब की बोतल** के साथ एक औ़रत के हमराह देखा, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दिल में कहा : क्या येह **शराबी ह़बशी** भी मुझ से बेहतर हो सकता है ! इसी दौरान एक **कश्ती** गुज़री जिस पर सात अफ़राद सुवार थे, यकायक वोह ग़रक़ेआब हो गई और सातों आदमी डूब गए। येह देख कर **ह़बशी** दरिया में कूद गया और उस ने एक एक कर के छे

अफ़्राद को बाहर निकाला, फिर मुझ से बोला : सातवां आप निकालिये, मैं तो आप का इम्तिहान ले रहा था कि आप साहिबे बातिन भी हैं या नहीं ! येह भी सुन लीजिये ! येह औरत और कोई नहीं बल्कि मेरी अम्मीजान हैं और बोतल में शराब नहीं सादा पानी है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه समझ गए कि येह ह़बशी कोई आम आदमी नहीं बल्कि मेरी इस्लाह़ के लिये आई हुई ग़ैबी हस्ती है। लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस का एह़तिराम किया और दुआ़ की दरख़्वास्त की, उस ने दुआ़ की : **अल्लाह** पाक आप को नूरे बसीरत (या'नी दिल की नज़र के नूर) से नवाज़े। इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कभी भी ख़ुद को किसी से बेहतर नहीं समझा यहां तक कि एक बार किसी ने इस्तिफ़्सार किया कि **कुत्ता** बेहतर है या आप ? फ़रमाया : अगर अ़ज़ाब से नजात पा गया तो मैं बेहतर वरना कुत्ता मुझ जैसे सैंकड़ों गुनहगारों से बेहतर है। (تذکرۃ الاولیاء حصہ:1، ص43 ماخوذا)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि किसी मुसल्मान के मुतअ़ल्लिक़ झटपट ग़लत राय नहीं क़ाइम कर लेनी चाहिये हमें क्या मा'लूम कि **अल्लाह** पाक की बारगाह में किस का क्या मक़ाम है !

नज़रे करम ख़ुदारा मेरे सियाह दिल पर बन जाएगा येह दम भर में बे बहा नगीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 190)

﴾32﴿ ह़बशी ने जूं ही दुआ़ मांगी.....

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! मा'लूम हुवा वोह **ह़बशी** कोई पहुंचे हुए बुज़ुर्ग थे। लिहाज़ा किसी की ज़ाहिरी शक्लो सूरत और लिबास वग़ैरा

को देख कर उस की हरगिज़ तह़क़ीर नहीं करनी चाहिये। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक साल मदीनए मुनव्वरह में क़ह़्त़ हुवा लोगों को अज़ ह़द ग़म हुवा, एक रोज़ अहले मदीना नमाज़े इस्तिस्क़ा (या'नी बारिश मांगने की नमाज़) के वासिते़ निकले और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी साथ थे, सब लोग रो रो कर दुआ़ मांगने लगे किसी की दुआ़ क़बूल नहीं होती थी, इतने में दो चादरों में मल्बूस एक ह़बशी आया और बारगाहे ख़ुदा वन्दी में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "इलाही ! हम गुनहगार हैं तूने हम लोगों को अदब सिखाने के लिये पानी रोक लिया है, **या अल्लाह** ! अपनी रह़मत से इसी वक़्त पानी बरसा, इसी वक़्त पानी बरसा, इसी वक़्त पानी बरसा।" फ़िलफ़ौर घन्घोर घटा उमंड आई, और मूसलाधार बारिश बरसने लगी।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वहां से ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास आए, उन्हों ने फ़रमाया : क्या बात है कि आप उदास नज़र आ रहे हैं ? उन्हों ने ह़बशी की दुआ़ और बारिश वाला वाक़िआ़ सुनाया, येह सुन कर ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने चीख़ मारी और बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। (احیاء العلوم، 1/408، ماخوذا) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही — न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा — मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

﴾33﴿ औलादे नरीना हो गई

ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की

आ़दत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहो़ल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये नेक आ'माल के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना जाएज़े के ज़रीए़ नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की भी क्या ख़ूब मदनी बहार है एक इस्लामी भाई की भाभी "उम्मीद" से थीं । अल्ट्रा साउन्ड के ज़रीए़ बताया गया कि बेटी है, भाईजान ने निय्यत की अगर **बेटा** हुवा तो दा'वते इस्लामी के **आ़शिक़ाने रसूल** के सुन्नतों की तरबियत के 3 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा । اَلْحَمْدُلِلّٰه उन के भाई के घर **बेटा** पैदा हुवा ।

नेक औलाद की, दाद फ़रियाद की ख़ातिर आओ चलें, क़ाफ़िले में चलो
क़ल्ब भी शाद हो, घर भी आबाद हो शादियां भी रचें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जितनी निय्यतें ज़ियादा सवाब भी ज़ियादा

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! مَاشَآءَاللّٰه **अच्छी निय्यत** और वोह भी **मदनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र करने की, سُبْحٰنَ اللّٰه ! इस की भी क्या ख़ूब बरकत है कि اَلْحَمْدُلِلّٰه औलादे नरीना से गोद हरी हो गई ! येह ज़ेह्न में रहे कि जितनी **अच्छी निय्यतें** ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब में इज़ाफ़ा होगा लिहाज़ा किसी जाइज़ मक़्सद पाने की निय्यत के साथ सवाबे आख़िरत की निय्यत को नहीं भूलना चाहिये । मसलन अगर सिर्फ़

औलाद की निय्यत से मदनी क़ाफ़िले में सफ़र किया तो मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का सवाब नहीं मिलेगा। अगर सवाब की निय्यत भी की होगी तो औलाद न भी मिले اِنْ شَآءَاللّٰه सवाब ज़रूर मिल जाएगा। जैसा कि पारह 13 **सूरए यूसुफ़** आयत 56 में **अल्लाह** पाक का इर्शादे गिरामी है :

وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ (پ13یوسف:56)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम नेकों का नेग ज़ाएअ् नहीं करते।

﴿34﴾ ग़ीबत करने वाले को तोह़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को किसी ने कहा कि फ़ुलां ने आप की **ग़ीबत** की है तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने **ग़ीबत** करने वाले आदमी को खजूरों का एक थाल भर कर रवाना किया और साथ ही कहला भेजा कि सुना है आप ने मुझे अपनी नेकियां हदिय्या की हैं तो मैं ने उन का बदला देना बेहतर जाना इस लिये खजूरें ह़ाज़िर की हैं। (منہاج العابدین، ص65) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ग़ीबत करने वाले को दुआए ख़ैर से नवाज़िये

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! देखा आप ने ! **औलियाउल्लाह** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم का **नेकी की दा'वत** का अन्दाज़ भी कितना अनोखा हुवा करता था, जब ज़माने के वली की त़रफ़ से **ग़ीबत** करने वाले को बदले में **खजूरों का थाल** पहुंचा होगा वोह किस क़दर मुतअस्सिर हुवा होगा ! और येह भी ह़क़ीक़त है कि जिस की **ग़ीबत** की जाए वोह फ़ाएदे में रहता है क्यूं कि जिस ने **ग़ीबत** की उस की नेकियां इस (या'नी जिस की **ग़ीबत** की गई उस) के आ'माल नामे में मुन्तक़िल की जाती हैं और जो नेकियां गोया तोह़फ़े में दे वोह एक त़रह़ से हमारा ख़ैर ख़्वाह या'नी भलाई चाहने

वाला ही हुवा। लिहाज़ा उस से उलझने के बजाए उस के हक़ में दुआए ख़ैर करनी चाहिये।

जो ग़ीबत से चुग़ली से रहता है बच कर मैं देता हूं उस को दुआए मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾35﴿ इत्र की शीशी का तोहफ़ा

एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का कुछ इस तरह बयान है : मुझे पता चला कि फ़ुलां साहिब ने मेरे ख़िलाफ़ लोगों में **ग़ीबत** की है, मुझे हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की हिकायत मा'लूम थी (जो अभी गुज़री) लिहाज़ा इन की पैरवी की निय्यत से उन साहिब को तोहफ़तन **"इत्र की शीशी"** भिजवाई और जिन के ज़रीए भिजवाई उन को दरख़्वास्त कर दी कि सौग़ात भिजवाने का सबब बयान कर के आप उन की तफ़्हीम कीजिये या'नी समझाने की तरकीब बनाइये, बात आई गई हो गई। एक बार हम चन्द इस्लामी भाई इत्तिफ़ाक़ से उन **ग़ीबत** व मुख़ालफ़त करने वाले साहिब की दुकान के क़रीब से गुज़रे, देखते ही वोह अपनी दुकान से बाहर आ गए, पुर तपाक तरीक़े पर मुलाक़ात की, फल के रस या किसी मश्रूब से हमारी ख़ातिर तवाज़ोअ़ की और अपनी दुकान के अन्दर मुझ से हाथ उठवा कर दुआए बरकत करवाई। لِلّٰهِ الْحَمْد

तू पीछे न हटना कभी ऐ प्यारे मुबल्लिग़ ! शैतान के हर वार को नाकाम बना दे

(वसाइले बख़्शिश स. 120)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾36﴿ मदनी मुन्ने की जान बच गई

ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से हर दम

वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये नेक आ'माल के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना जाएज़े के ज़रीए़ नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। एक इस्लामी भाई का पांच माह का मदनी मुन्ना मुसल्सल बीमार रहता। तक़रीबन तमाम बड़े बड़े अस्पतालों में इलाज करवाया, जब "एक अस्पताल" से लीवर स्केन करवाया तो पता चला कि बच्चे का एक कनेक्शन नहीं है जो जिगर से आंतों को पहुंचता है। बड़े डॉक्टर ने बताया कि इस का ऑपरेशन होगा मगर उस के काम्याब होने के इम्कानात कम हैं। रमज़ानुल मुबारक में **ऑपरेशन** के लिये मदनी मुन्ने को अस्पताल में दाख़िल करवा दिया। हफ़्ते वाले रोज़ मुन्ने का **ऑपरेशन** हुवा तो डॉक्टरों ने बताया कि इस का तो **कनेक्शन** भी नहीं, **पित्ता** भी नहीं और **जिगर** भी बहुत कमज़ोर है जो कि सिर्फ़ 25 फ़ीसद काम कर रहा है। इस बच्चे के बचने का इम्कान बहुत ही कम है। दूसरे हफ़्ते मुन्ने का **दूसरा ऑपरेशन** तै़ हुवा, वोह इस्लामी भाई ऑपरेशन के एक दिन पहले या'नी जुमुआ़ के रोज़ **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गए। اَلْحَمْدُلِلّٰه **मदनी क़ाफ़िले** से वापसी पर पता चला कि उन के मुन्ने का **ऑपरेशन काम्याब** हो गया है मगर उस को दूध नहीं दे सकते थे और पेशाब में ख़ून आ रहा था। वोह दूसरे हफ़्ते फिर **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो गए। اَلْحَمْدُلِلّٰه **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र के दौरान ही घर वालों ने फ़ोन पर इत्तिलाअ़ दी कि पेशाब में ख़ून आना भी बन्द हो गया है और इस ने दूध पीना भी

शुरूअ़ कर दिया है। वोह **मदनी क़ाफ़िले** से इतवार को वापस आए और اَلْحَمْدُ لِلّٰه दूसरे दिन या'नी पीर शरीफ़ को अस्पताल से छुट्टी भी मिल गई और वोह मुन्ने को घर ले आए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से उन का मुन्ना बिल्कुल ठीक हो गया। **अल्लाह** पाक दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल को सलामत रखे। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

बच्चा बीमार है, बाप बेज़ार है ग़म के साए ढलें, क़ाफ़िले में चलो
ग़म चले जाएंगे, दिन भले आएंगे सब्र से काम लें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾37﴿ 15 सालह मरीज़ा की ईमान अफ़रोज़ सिह्हत याबी

ऐ आशिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! मदनी क़ाफ़िले की बरकत से नाक़िस बच्चा न सिर्फ़ ज़िन्दा बच गया बल्कि सिह्हत मन्द भी हो गया। **अल्लाह** पाक की क़ुदरत के येह सब करिश्मे हैं, यक़ीनन **दा'वते इस्लामी** वालों पर रब्बुल अकरम का बे इन्तिहा करम है। बेशक **अल्लाह** पाक चाहे तो कैसा ही गम्भीर मस्अला हो चुटकी में ह़ल हो जाता है। इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ **ह़िकायत** सुनिये और झूमिये चुनान्चे **बग़दाद** शरीफ़ में एक अ़लवी लड़की रहती थी, वोह पन्दरह साल तक अपाहज (या'नी मा'ज़ूर) रही, एक रात वोह सो कर उठी तो तन्दुरुस्त थी, अब वोह उठ कर बैठ भी सकती थी और खड़ी भी हो सकती थी, उस से इस सिल्सिले में पूछा गया तो उस ने कहा : एक रात मैं सख़्त दिल बरदाश्ता हुई, मैं ने **अल्लाह** पाक से दुआ़ मांगी कि या तो इस मुसीबत से नजात अ़त़ा फ़रमा दे या फिर मौत दे दे और बहुत रोई। ख़्वाब में देखा कि एक बुज़ुर्ग मेरे पास तशरीफ़ लाए हैं, मैं कांप गई, और मैं ने कहा : क्या आप का इस त़रह़ मेरे पास आना जाइज़ है ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं तुम्हारा

वालिद हूं, मैं ने गुमान किया कि शायद मेरे जद्दे आ'ला ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप मेरी ह़ालत नहीं देखते ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं तेरा वालिद मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हूं। मैं ने रोते हुए अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** पाक से मेरे लिये सिह़्ह़त की दुआ फ़रमा दीजिये। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों होंटों को ह़रकत दी। फिर फ़रमाया : अपना हाथ लाओ, मैं ने अपना हाथ पेश कर दिया तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे पकड़ कर खींचा और मुझे बिठा दिया। फिर फ़रमाया : **अल्लाह** का नाम ले कर खड़ी हो जाओ। मैं ने अ़र्ज़ की : मैं कैसे खड़ी हो जाऊं मैं तो मा'ज़ूर हूं ! फ़रमाया : अपने दोनों हाथ लाओ, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें पकड़ कर खींचा तो मैं खड़ी हो गई, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन दफ़्आ इसी त़रह़ किया, फिर फ़रमाया : खड़ी हो जाओ, **अल्लाह** पाक ने तुम्हें सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा दी है, तुम उस की ह़म्द करो और उस से डरो, फिर मुझे छोड़ा और तशरीफ़ ले गए। जब मैं बेदार हुई तो तन्दुरुस्त थी, उन का वाक़िआ़ **बग़दाद शरीफ़** में ख़ूब मश्हूर हुवा। (مصباح الظلام فی المستغیثین بخیر الانام، ص153)

सरे बालीं इन्हें रह़मत की अदा लाई है ह़ाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है

﴾38﴿ लम्बा सियाह आदमी

ह़ज़रते ख़ालिद रबई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं जामेअ़ मस्जिद में बैठा था कि कुछ लोग एक शख़्स की ग़ीबत करने लगे, मैं ने उन्हें इस से मन्अ़ किया तो ग़ीबत से बाज़ आ कर किसी और मौज़ूअ़ पर आ गए, कुछ देर बा'द फिर उसी शख़्स के ख़िलाफ़ बोलने लगे, अब की बार मैं भी कुछ देर के लिये गुफ़्तगू में शरीक हो गया। रात को ख़्वाब देखा कि

एक लम्बा सियाह आदमी थाल में ख़िन्ज़ीर के गोश्त का लोथड़ा लिये आया और कहने लगा : खाओ ! मैं ने कहा : मैं..... मैं..... मैं क्यूं "ख़िन्ज़ीर का गोश्त" खाऊं ? **अल्लाह** की क़सम ! मैं नहीं खाऊंगा। उस ने मुझे सख़्ती से झन्झोड़ा और कहा : तुम ने तो इस से भी गन्दी चीज़ खाई (या'नी **ग़ीबत** की) है। येह कह कर उस ने मुझे गुद्दी से पकड़ा और ख़िन्ज़ीर का गोश्त जिस से ख़ून बह रहा था मेरे मुंह में ठूंसने लगा हत्ता कि मैं नींद से बेदार हो गया। ख़ुदा की क़सम ! तीस दिन तक मुझे उस की बदबू आती रही और मैं जब भी खाना खाता तो उस से ख़िन्ज़ीर के गोश्त का ज़ायक़ा अपने मुंह में महसूस करता। (ذم الغیبۃ لابن ابی الدنیا، ص85، رقم:43)

﴾39﴿ अम्रद बीनी वग़ैरा की हाथों हाथ ग़ैबी सज़ाएं

ऐ आशिक़ाने औलिया ! येह बुज़ुर्ग नसीब दार थे कि इन को दुन्याए ना पाएदार ही में ख़्वाब के ज़रीए ख़बरदार कर दिया गया। आह ! हमारा क्या बनेगा ! अफ़्सोस ! हम ने तो न जाने कितनों की **ग़ीबतें** की और सुनी होंगी। **अल्लाहु** रब्बुल इज़्ज़त हमें दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत से बचाए। बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि गुनाह करते ही हाथों हाथ सज़ाएं मिलती और ख़ूब ख़ूब रुस्वाई होती है चुनान्चे आशिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** (853 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 646 पर है : बा'ज़ लोगों ने अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) को शह्वत के साथ या **औरत** को देखा तो उन की आंखें बह कर रुख़्सारों (या'नी गालों) पर आ गईं ! बा'ज़ ने जूं ही अपना हाथ किसी **औरत** के हाथ पर रखा तो दोनों के हाथ आपस में **चिमट** गए और ख़ूब रुस्वाई हुई, लोग उन्हें जुदा करने में नाकाम हो गए, यहां तक कि बा'ज़ उ़लमाए किराम

رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم ने उन की रहनुमाई फ़रमाई कि सच्चे दिल से तौबा करें और अ़ह्द करें कि आइन्दा ऐसी गन्दी ह़रकत कभी नहीं करेंगे। जब उन्हों ने ऐसा किया, तो **अल्लाह** पाक ने उन्हें छुटकारा अ़ता फ़रमाया। इस किताब के मुसन्निफ़ ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इसी त़रह़ मेरे एक जानने वाले के साथ हुवा जो कि ख़ुश शक्ल व ख़ुश अन्दाम था, उस ने गुनाह किया भी तो कैसी मुक़द्दस जगह पर ! मस्जिदुल ह़राम के अन्दर और वोह भी **ह़जरे अस्वद** के पास उस पर शैत़ान सुवार हुवा और उस ने एक औ़रत को चूम लिया ! क़ह्रे इलाही की बिजली गिरी और उस का चेहरा पूरे का पूरा मस्ख़ हो गया, (या'नी बिगड़ गया) तन बदन बे ढब हुवा, अ़क़्ल कुन्द हुई और आवाज़ भी ख़राब हो गई अल ग़रज़ सरापा इ़ब्रत का नुमूना बन गया। हम भटक्ने से **अल्लाह** करीम की पनाह मांगते हैं और **अल्लाह** पाक से इल्तिजा करते हैं कि हमें मरते दम तक आज़माइशों से बचाए, बेशक वोह सब से ज़ियादा करीम व रह़ीम है।

गुनाहों ने कहीं का भी न छोड़ा करम मुझ पर ह़बीबे किब्रिया हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 316)

﴾40﴿ लिफ़्ट का पंखा

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! यक़ीनन अपनी चीज़ की बुराई सुनना किसी को भी अच्छा नहीं लगता, इस ज़िम्न में अपना एक वाक़िआ़ तसर्रुफ़ के साथ अ़र्ज़ करता हूं चुनान्चे सख़्त गर्मियों के दिन थे, हम चन्द इस्लामी भाई किसी के घर से खाना खा कर निकले और लिफ़्ट में सुवार हुए, गर्म हवा का एह़सास हुवा, एक ने कहा : पंखा लगा हुवा है, दूसरा बोला : फ़ुलां किराएदार इस्लामी भाई की इ़मारत की लिफ़्ट तो एयर कन्डीशन्ड है, इस पर हमारा मेज़बान जो कि उस इ़मारत के एक फ़्लेट का

किराएदार था वोह बोल उठा : "येह इमारत काफ़ी पुरानी है।" सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ ने तीसरे से अ़र्ज़ की : येह बताइये कि आप की बात कि "येह इमारत काफ़ी पुरानी है" सुन कर मकान मालिक ख़ुशी से झूम उठेगा या दिल बरदाश्ता होगा ? इस पर वोह पशेमान हुए कि वाक़ेई पता लगने की सूरत में उसे ईज़ा पहुंचेगी। फिर मेरी बात की तौसीक़ करते हुए उन्हों ने अपना एक वाक़िआ़ सुनाया कि मेरे पास एक पुरानी कार थी एक बार मेरे बे तकल्लुफ़ दोस्त ने कहा : यार ! इस "खटारे" को छुट्टी भी करवाओ ! मुझे इस जुम्ले से सख़्त सदमा पहुंचा और मैं ने वोह कार इस्ति'माल करना छोड़ दी और एक दोस्त के गेराज में डलवा दी। अ़र्सा हुवा यूं ही पड़ी है, बेचने को भी दिल नहीं करता क्यूं कि उस के साथ मेरी बा'ज़ मुतबर्रिक यादें वाबस्ता हैं। जो जो इस्लामी भाई गुफ़्तगू में शरीक थे اَلْحَمْدُ لِلّٰه सब ने **ग़ीबतें** करने सुनने से तौबा की।

ऐ़ब बयान करना ग़ीबत है भी और नहीं भी

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बयान कर्दा हि़कायत से बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि फ़ुज़ूल गुफ़्तगू किस क़दर ख़त़रनाक होती है कि ग़ीबत हो जाती है और कानों कान ख़बर भी नहीं होती ! इस हि़कायत में एक नहीं कम अज़ कम दो ग़ीबतें हैं एक तो वोही "इमारत बहुत पुरानी है" और इस से पहले की जाने वाली बात कि इस की लिफ़्ट में तो सिर्फ़ पंखा है जब कि फ़ुलां की लिफ़्ट में A.C. है। अगर येह बात भी मकान मालिक सुने तो उस को ना गवार गुज़रे लिहाज़ा येह भी ग़ीबत है। यहां येह वज़ाह़त करता चलूं कि अगर बुराई बयान करने का कोई सह़ीह़ मक़्सद हो मसलन इमारत में फ़्लेट किराए पर लेना था और इस ज़िम्न में येह गुफ़्तगू हुई कि येह इमारत भी पुरानी है और लिफ़्ट में भी सिर्फ़ पंखा

लगा हुवा है, फुलां इमारत बेहतर है कि उस की लिफ़्ट में भी A.C. है, चलो वहीं फ़्लेट बुक करवाते हैं। तो येह गुनाह भरी ग़ीबत नहीं। अगर किसी सह़ीह़ मक़्सद की निय्यत नहीं बस यूं ही किसी का ऐब या उस की किसी चीज़ की ख़राबी को पीठ पीछे बयान कर दिया जैसा कि आज कल हमारी अक्सरिय्यत की आ़दत है तो येह गुनाह भरी ग़ीबत है और मज़्कूरा ह़िकायत में भी महज़ फ़ुज़ूल बक बक के तौ़र पर बिला मक़्सदे सह़ीह़ इमारत के ऐब बयान किये गए लिहाज़ा वोह दोनों बातें गुनाहों भरी ग़ीबतें शुमार होंगी।

दुआ़ए अ़त्तार

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा, **अल्लाह** पाक ! हमारे सारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, **या अल्लाह** पाक ! हमें ग़ीबतों चुग़्लियों, तोह्मतों, बद गुमानियों, दिल आज़ारियों और हर त़रह़ के गुनाहों से बचा, **या अल्लाह** करीम ! हमें पक्का नमाज़ी और सुन्नतों का आ़दी, नेक आ'माल पर अ़मल करने वाला और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बना। **या अल्लाह** पाक ! हमें दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

ख़ुदाया अजल आ के सर पर खड़ी है — दिखा जल्वए मुस्त़फ़ा या इलाही
मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से — हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105, 106)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अच्छा गुमान इबादत है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

"حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ"

या'नी हुस्ने ज़न उ़म्दा इबादत से है। (ابوداؤد، 4/388، حدیث:4993)

हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : या'नी मुसल्मानों से अच्छा गुमान करना, उन पर बद गुमानी न करना येह भी अच्छी इबादात में से एक इबादत है। (मिरआतुल मनाजीह, 6/621)